पाठ-16

नव संवत्सर

आइए, सीखें : ● भारतीय लोक-परम्पराओं, विश्वासों, पर्वों आदि का परिचय ● विक्रम संवत् एवं अन्य संवत्सरों की जानकारी ● वार्तालाप शैली से परिचय ● प्रत्यय, सन्धि, समास, विशेषण-विशेष्य की जानकारी।

*(**पाठ-परिचय :** चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नव संवत्सर प्रारंभ होता है। इस तिथि से और भी कई लोक परम्पराएँ, पौराणिक कथाएँ और विश्वास जुड़े हैं। इसे गुड़ी पड़वा भी कहते हैं। इसी दिन से भारतीय नव वर्ष का आरंभ होता है।)*

चैत्र का महीना था। प्रातः काल अखिल और समिधा अपने भाई श्रीकान्त के साथ बैठे बातचीत कर रहे थे। तभी बैठक में शेखर ने प्रवेश किया।

श्रीकान्त- ''नमस्ते, शेखर! आओ बैठो।''

अखिल और समिधा-''नमस्ते शेखर भैया।''

शेखर- ''नमस्ते! साथ ही नव वर्ष की बधाई।''

अखिल, समिधा और श्रीकांत आश्चर्य से शेखर की ओर देखते हैं।

श्रीकान्त- ''शेखर, नव वर्ष बीते तो कितने दिन हो गए आज कौन सा नववर्ष है।''

शेखर- ''अरे भाई, आज गुड़ी पड़वा है, यह हमारे देश में प्रचलित विक्रम संवत् का प्रथम दिन है। इसी दिन से भारतीय नव वर्ष या संवत्सर का आरंभ होता है। इसे चैत्र शुक्ल प्रतिपदा भी कहते हैं।''

समिधा- ''अरे! यह सब तो हमें पता ही न था।''

शेखर- ''पौराणिक कथाओं के अनुसार प्रजापति ब्रह्मा ने इसी तिथि को सृष्टि का सृजन किया था। भगवान विष्णु भी मत्स्यावतार के रूप में इसी तिथि को प्रकट हुए थे और सतयुग के प्रारंभ होने की भी यही तिथि है।''

अखिल- शेखर भैया, इसे ''गुड़ी पड़वा'' क्यों कहते हैं?

शेखर- ''गुड़ी का अर्थ है ध्वज या झण्डी'' और पड़वा कहते हैं प्रतिपदा को। लोक परम्परा के अनुसार माना जाता है कि इसी दिन श्री रामचंद्र जी ने किष्किंधा के राजा बाली का वधकर उसके स्वेच्छाचारी राज का अंत किया था। बाली वध के पश्चात् वहाँ की प्रजा ने पताकाएँ, जिन्हें महाराष्ट्र में गुड़ी कहते हैं, फहराकर उत्सव मनाया था।

आज वहाँ आँगन में बाँस के सहारे गुड़ी खड़ी की जाती है। इसलिए चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को गुड़ी पड़वा कहते हैं।''

श्रीकान्त ''शेखर, संवत्सर के बारे में और भी कुछ बताओ न?''

शेखर– ''सुनो संवत्सर का उपयोग समय की गणना के लिए एक वर्ष की अवधि के अर्थ में किया जाता है। ऋग्वेद और अथर्ववेद आदि प्राचीन ग्रंथों में भी संवत्सर का एक काल चक्र के रुप में उल्लेख है।''

श्रीकान्त ''इसका अर्थ है भारत में समय की गणना करने की विधि अति प्राचीन है।''

शेखर ''नहीं तो क्या? हमारे यहाँ दिनों महीनों की भाँति संवत्सरों का भी नामकरण किया गया है जो साठ वर्ष बाद पुन: एक चक्र के रूप में आते रहते हैं। विक्रम संवत् 2063 का नाम विकारी नाम संवत्सर है। इसके पहले के दो संवत्सरों के नाम 'हेमलम्ब नाम' और 'बिलम्ब नाम' संवत्सर थे।''

अखिल विक्रम संवत् क्या है?

शेखर अखिल, विक्रम संवत् का प्रचलन उज्जयिनी के महान सम्राट विक्रमादित्य ने विदेशी आक्रमणकारी शक राजाओं पर अपनी विजय के उपलक्ष्य में ईसा पूर्व सन् 57 में किया था। समिधा, क्या तुम्हें हमारे महीनों के नाम पता है?

समिधा हाँ, हाँ। जनवरी, फरवरी, मार्च....।

शेखर बस, बस। जरा रुको। यह तो तुम ईसवी सन् के महीनों के नाम बता रही हो। विक्रम संवत् या भारतीय महीनों के नाम हैं, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, अश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन। अब तो नहीं भूलोगी।

समिधा नहीं भैया। इनमें से कुछ नाम तो मैं भी जानती हूँ। माँ व्रतों और पर्वों के लिए इन्हें बताती थी।

प्राचीन ग्रंथों में संवत्सर चक्र का वर्णन बारह अरे, तीन सौ सन्धियों, छह नेमियों और तीन नाभियों के रूप में किया गया है। यह बारह महीने, तीन सौ साठ तिथियों (एक चंद्र वर्ष) छ: ऋतुओं (बसंत, ग्रीष्म, पावस, शरद, हेमन्त, शिशिर) और तीन चातुर्मास (ग्रीष्म, वर्षा, शीत) के प्रतीक हैं।

शिक्षण-संकेत : ■ शिक्षक विक्रम संवत् के प्रथम दिन तथा गुड़ी पड़वा का महत्व एवं संदर्भ समझाएँ। ■ संवत्सर चक्र के चित्र को देखकर प्रत्येक बिन्दु पर चर्चा कर उन्हें समझाएँ। ■ पौराणिक कथाओं की भी कक्षा में चर्चा करें।

शेखर इन महीनों को चंद्रमास कहते हैं। प्रत्येक माह के दो पक्ष होते हैं। अमावस्या के बाद प्रतिपदा से पूर्णिमा तक की तिथियों को शुक्ल पक्ष और पूर्णिमा के बाद भी प्रतिपदा से अमावस्या तक तिथियाँ कृष्ण पक्ष कहलाती हैं। ये पक्ष कभी पन्द्रह दिन के तो कभी चौदह दिन के होते हैं इसलिए चन्द्रमास भी घटता-बढ़ता रहता है।

अखिल ''शेखर भैया, प्रतिपदा की भाँति दूसरी अन्य तिथियों के भी तो नाम होंगे?''

शेखर ''हाँ इनके नाम हैं, प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी और चतुर्दशी। ये तिथियाँ दोनों पक्षों में होती हैं। शुक्ल पक्ष की पन्द्रहवीं तिथि को पूर्णिमा और कृष्ण पक्ष की पन्द्रहवीं या माह की तीसवीं तिथि को अमावस्या कहते हैं।''

समिधा- ''क्या विक्रम संवत् पूरे देश में प्रचलित है?''

शेखर- ''हाँ, पर कुछ अंतर के साथ।''

समिधा- कैसा अंतर?

शेखर- उत्तर भारत में विक्रम संवत् का आरम्भ चैत्र प्रतिपदा से होता है इसे चैत्रादि कहते हैं जबकि दक्षिण भारत में संवत्सर का आरंभ कार्तिक शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से माना जाता है इसे कार्तिकादि कहते हैं। व्यापारी लोग भी कार्तिकादि नववर्ष मनाते हैं, इसलिए वे दीपावली पर नया बहीखाता प्रारंभ करते हैं।

श्रीकान्त अरे! यह तो तुमने बड़ी रोचक बात बताई है।

शेखर- यही नहीं, उत्तर भारत में माह का आरम्भ कृष्ण पक्ष प्रतिपदा से तथा अंत पूर्णिमा से होता है, इसके विपरीत दक्षिण भारत में माह का आरंभ शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से और अंत अमावस्या को होता है। इसे पूर्णिमान्त और अमान्त कहते हैं।

समिधा- शेखर भैया, इन तिथियों का पता हमें कैसे चलता है?

शेखर- समिधा, इन तिथियों का पता हमें पंचांग से चलता है। पचांग से तिथि, पक्ष, माह, चन्द्रमा और सूर्य की स्थिति के साथ-साथ अन्य नक्षत्रों की जानकारी मिलती है। आकाश में चन्द्रमा की कलाओं को देखकर भी तिथियों का अनुमान लगाया जा सकता है। हमारे यहाँ सौर वर्ष के साथ-साथ चाँद वर्ष का उपयोग किया गया है।

अखिल- सौर वर्ष और चाँद वर्ष में क्या अन्तर है?

> भारतीय महीनों के नाम इन नक्षत्रों पर आधारित हैं- चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, आषाढ़, श्रवण, भाद्रपद, अश्विनी, कृतिका, मृगशिरा, मघा, पुष्य, फाल्गुन।

शेखर– यह तो तुम्हें पता होगा कि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा लगभग 365 1/4 दिन में करती है। यह अवधि एक नक्षत्र सौर वर्ष कहलाती है। जबकि चान्द्रवर्ष लगभग 354 दिनों का होता है। इसे 360 तिथियों में बाँटते हैं। सौरवर्ष और चान्द्रवर्ष में सामंजस्य बनाने के लिए प्रत्येक 32 या 33 चान्द्रमासों के बाद एक अतिरिक्त चान्द्रमास जोड़ दिया है। इस अतिरिक्त मास को अधिक मास/ मल मास या लोंद का महीना कहते हैं। यह चान्द्रमास 13 महीने का होता है।

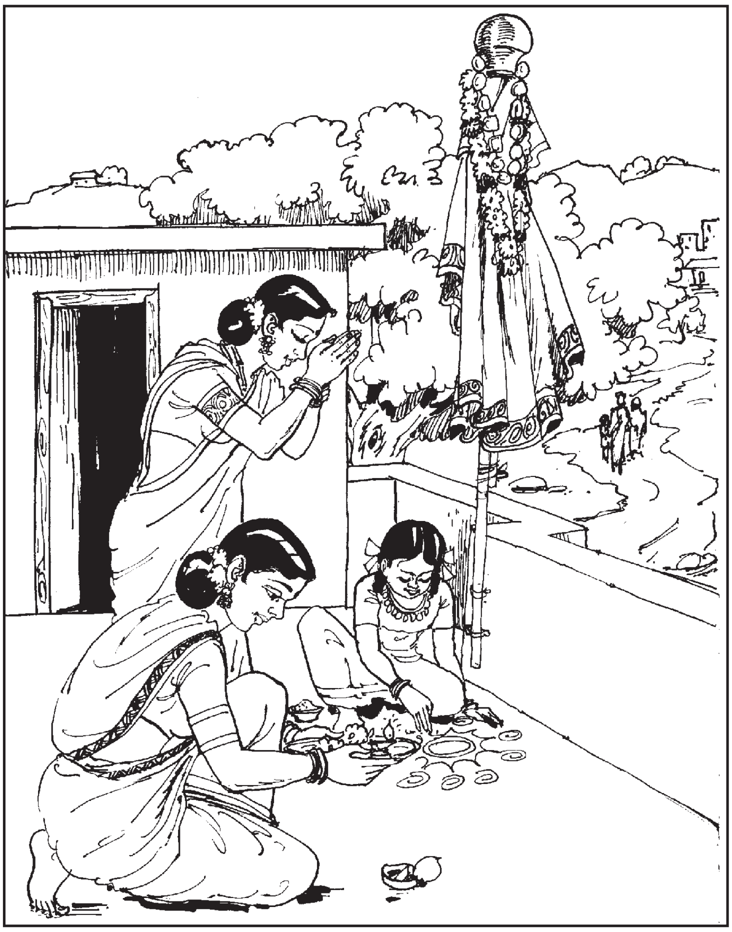

समिधा– तो यह बात है। तभी कुछ समय पहले दो-दो सावन के महीने हुए थे।

शेखर– हाँ, कभी-कभी आषाढ़ का महीना भी अतिरिक्त होता है इसीलिए एक कहावत है 'दुबले और दो आषाढ़'।

अखिल– यानी मुसीबत या परेशानी की अवधि का और अधिक बढ़ जाना। अच्छा, ये तो बताओ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का कोई दूसरा महत्व भी है?

शेखर– हाँ, चैत्र माह में बसंत ऋतु का आगमन होता है। बसंत ऋतु में प्रकृति भी अपना नव श्रृंगार करती है। पेड़ अपने पुराने पत्ते गिराकर नए पत्ते धारण करते हैं। ऋतु परिवर्तन के अवसर पर हमारे यहाँ नवरात्रि पर्व मानने की परंपरा है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से प्रारंभ होने वाली नवरात्रि शारदीय कहलाती है। 'वासंतीय' नवरात्रि का

शिक्षण संकेत : ■ कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष के बारे में बताएँ। ■ उत्तर भारत और दक्षिण भारत में विक्रम संवत् का आरंभ कब होता है- बच्चों को बताएँ। ■ व्यापारी लोग भी कार्तिकादि नववर्ष मनाते हैं, इसीलिए वे दीवाली पर नया बहीखाता प्रारंभ करते हैं।

समापन राम नवमी और शारदीय नवरात्रि का समापन दशहरा पर्व पर होता है।

श्रीकान्त– रामनवमी और दशहरा दोनों पर्वों का सम्बन्ध भगवान श्री राम से है। रामनवमी उनके जन्मदिवस और दशहरा रावण पर विजय के उपलक्ष्य में मनाते हैं। यह बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है।

शेखर– ''हाँ, श्रीकान्त। नवरात्रियों का समय शक्ति की पूजा-उपासना के साथ-साथ स्वास्थ्य सम्वर्धन के लिए भी अच्छा अवसर है। गुड़ी पड़वा को चैती चाँद पर्व के रूप में भगवान झूलेलाल की जयंती भी मनाई जाती है।''

अखिल– ''भगवान झूलेलाल'' जी कौन थे?

शेखर– ''भगवान झूलेलाल का जन्म विक्रम संवत् 1007 को सिन्ध प्रान्त (जो आजकल पाकिस्तान का अंग है) में नसीरपुर नामक स्थान पर भाई रतन राय के घर में हुआ था। भगवान झूलेलाल साम्प्रदायिक सद्भाव और एकता के प्रतीक हैं। हमारे सिन्धी भाई उनकी जयंती को बड़े धूमधाम से मनाते हैं।''

श्रीकान्त– शेखर....।

शेखर– ''अब बस भी करो भाई। मुझे यहाँ आए कितनी देर हो गई है? चलो, उठो। चलकर दूसरे मित्रों को भी गुड़ी पड़वा, नववर्ष और चैतीचाँद की बधाई दें।''

समिधा– हाँ, भैया। हम भी द्वार पर चौक पूरा कर नव संवत्सर का स्वागत करेंगे।

सामान्यतः सूर्य प्रत्येक चान्द्रमास में एक राशि (मेष, धनु आदि) को पार करता है, जो संक्रान्ति कहलाती है, किन्तु चन्द्रमा और सूर्य की असमान गति के कारण ऐसी स्थिति भी आती है जब किसी चन्द्रमास कोई भी राशि संक्रान्ति न हो ऐसे महीने को अधिक मास मानकर उसे, उसके अगले महीने का नाम देते हैं।

शिक्षक बच्चों को सौर वर्ष और चन्द्रवर्ष का अंतर बताएँ (सौर वर्ष लगभग 365 दिन 6 घण्टे 9 मिनिट) तथा चान्द्रवर्ष लगभग 354 दिन 8 घण्टे 48 मिनिट)

---

12 राशियों के नाम पंचांग या समाचार पत्र देखकर बताएँ। इन राशियों को ज्योतिष या भाग्यफल से न जोड़ें तथा राशिफल के बारे में प्रोत्साहित न करें।

शिक्षण संकेत : शिक्षक नवरात्रि पर्व, राम नवमी और दशहरा पर्व के बारे में विस्तार से बताएँ तथा इन पर्वों के मनाने के स्थानीय ढंग तथा परम्पराओं पर चर्चा करें। शिक्षक मानचित्र की सहायता से सिन्ध प्रान्त और पाकिस्तान की स्थिति बताएँ। भगवान झूलेलाल जी के बारे में अधिक जानकारी एकत्र कर बच्चों को बताएँ। विक्रम संवत् के अतिरिक्त हमारे देश में प्रचलित अन्य संवतों की भी जानकारी बच्चों को दें।

अभ्यास

बोध-प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए-

नवसंवत्सर	--------------	सृष्टि	--------------
मत्स्य	--------------	वध	--------------
उत्सव	--------------	चैत्रादि	--------------
कार्तिकादि	--------------	पूर्णिमान्त	--------------
अमान्त	--------------	ऋतु	--------------
श्रृंगार	--------------	सम्वर्धन	--------------
जयंती	--------------	आततायी	--------------
पीर	--------------		

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

(अ) नव संवत्सर से क्या तात्पर्य है?

(आ) गुड़ी पड़वा नाम का क्या अर्थ है?

(इ) विक्रम संवत् किसने प्रारंभ किया?

(ई) बसंत ऋतु का आगमन किस भारतीय माह में होता है?

(उ) दक्षिण भारत में विक्रम संवत् का प्रारंभ किस भारतीय मास से होता है?

प्रश्न 3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(अ) चैती चाँद पर्व भगवान .... की जयंती के रूप में मनाते हैं।

(आ) प्रत्येक चार वर्ष बाद अतिरिक्त माह को .... माह तथा उसके वर्ष को .... वर्ष कहते हैं।

(इ) नवरात्रि बासंतीय .... माह में तथा नवरात्रि शारदीय .... माह में आती है।

प्रश्न 4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए -

1. संवत्सरों का नामकरण किस प्रकार किया जाता है?
2. भगवान झूलेलाल की पूजा क्यों की जाती है?
3. सौरवर्ष और चन्द्रवर्ष में क्या अंतर है?
4. सौरवर्ष और चन्द्रवर्ष के सामंजस्य के लिए क्या विधि अपनाते हैं?
5. विक्रम संवत् के अनुसार वर्ष के महीनों के नाम लिखिए?
6. विक्रम संवत् की प्रथम तिथि में कौन-कौन से प्रसंग जुड़े हैं ? लिखिए।

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए और अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

चैत्र, पौराणिक, किष्किन्धा, ऋग्वेद, अथर्ववेद, पूर्णिमा, विक्रमादित्य, स्वेच्छाचारी।

ध्यान से पढ़िए -

प्रथम अकारान्त ध्वनि वाले शब्द में 'इक' प्रत्यय जुड़ने पर ह्रस्व ध्वनि दीर्घ में परिवर्तित हो जाती है। जैसे-'संसार' में 'इक' प्रत्यय जुड़कर 'सांसारिक' शब्द बनता है। यदि शब्द की प्रथम ध्वनि इ/ई तो वह ऐ में परिवर्तित हो जाती है। इतिहास+इक= ऐतिहासिक

शब्द की प्रथम ध्वनि उ/ऊ हो तो 'औ' में परिवर्तित हो जाती है। जैसे पुराण+इक=पौराणिक

अब समझिए

शब्द	इक प्रत्यय	परिवर्तन	परिवर्तित शब्द
संसार	इक	अ आ	सांसारिक
इतिहास	इक	इ ऐ	ऐतिहासिक
पुराण	इक	उ औ	पौराणिक
भूगोल	इक	ऊ औ	भौगोलिक

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों में इक प्रत्यय का प्रयोग करके नए शब्द बनाइए -

प्रसंग – ....

समाज – ....

परिवार – ....

नीति – ....

साहित्य – ....

मूल – ....

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों की संन्धि विच्छेद कीजिए -

स्वेच्छाचारी, विक्रमादित्य, सूर्योदय, पुस्तकालय, नरेन्द्र, नीरोग, निष्कपट, प्रातःकाल।

प्रश्न 4. अपनी पुस्तक के अंत में दिए शब्दकोश से निम्नलिखित शब्दों के अर्थ खोजिए तथा उन्हें अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

पर्व, गणना, मलमास, उपलक्ष्य, प्रस्थान, सम्वर्धन।

प्रश्न 5. निम्नलिखित शब्दों को वर्ण क्रम के अनुसार लिखिए-

शेखर, नव, पता, अखिल, चैत्र, उपयोग, ग्रंथों, ॠग्वेद, संवत्, विक्रम, बाद, रोचक, दक्षिण और तेरह, माह, कहा, आगमन।

सहीक्रम - अखिल, आगमन

....

....

....

....

प्रश्न 6. नीचे लिखे वाक्यों में विशेषण और विशेष्य छाँटकर तालिका में लिखिए-

क. नववर्ष बीते तो कितने दिन हो गए।

ख. प्राचीन ग्रंथों में भी संवत्सर का एक कालचक्र के रूप में उल्लेख है।

ग. प्रत्येक माह के दो पक्ष होते हैं।

ङ   यह तो तुमने बड़ी रोचक बात बताई।

तालिका	
विशेषण	**विशेष्य**

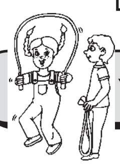

योग्यता विस्तार

1. संवत्सर के महत्व पर कक्षा में परिचर्चा कीजिए।
2. भारत में प्रचलित संवत् / सन् आदि की सूची बनाइए।
3. नव संवत्सर के उत्सव को आप अपने घरों में किस प्रकार मनाते हैं?
4. शिक्षक की सहायता से प्रसंग/घटना का वर्णन कीजिए और साथियों के साथ वार्तालाप कीजिए।

इन्हें भी जानिए :

संवत्– हमारे देश में विक्रम संवत् के अतिरिक्त अन्य कई संवत् भी प्रचलित हैं। **ईसवी संवत् या सन**– यह संवत् ईसाई धर्म के पैगम्बर संत ईसा मसीह के जन्म दिन से आरंभ होता है। इसके पहले के समय को ईसापूर्व (ई.पू.) कहा जाता है। **शक संवत्**– यह राष्ट्रीय संवत् है जो विक्रम संवत् के 135 वर्ष बाद शक क्षत्रप (राजा) चष्टन ने उज्जयिनी पर शकों के पुनः अधिकार होने पर चलाया था। **हिजरी संवत्**– यह इस्लाम धर्म के पैगम्बर हजरत मुहम्मद साहब के मक्का से हिजरत प्रस्थान करने की घटना के दिन से प्रारंभ हुआ था। **शालिवाहन संवत्**– यह महाराज शालिवाहन द्वारा प्रचलित संवत है यह भी गुड़ी पड़वा के दिन से प्रारंभ होता है। **कलिसंवत**– इसका प्रारंभ कलियुग के प्रथम दिन से माना जाता है। कलियुग का प्रारंभ भगवान श्री कृष्ण के अवसान के उपरांत हुआ था। इसके अतिरिक्त देश में बंगला संवत भी प्रचलित है।